(2ख) सामाजिक स्तरभेद और भाषा-विविधता

भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है, जिसके माध्यम से समाज-विशेष के लोग परस्पर विचार-विनिमय करते हैं। इस कथन से भाषा के दो आयाम स्पष्ट रूप से उभरते हैं—भाषा का संरचनात्मक आयाम और सामाजिक नियमों की दक्षता का आयाम। यदि कोई व्यक्ति संरचनात्मक दृष्टि से भाषा का अशुद्ध प्रयोग करता है तो उस भाषा-क्षेत्र में वह सम्मान का अधिकारी नहीं है—

1. मेरे को तेरे से काम है, अभी ठहर जा।
2. तू वहाँ ना जा।
3. आप आज मेरे घर खाना खाओ।
4. तू मुझे पढ़ना सिखा।

इस प्रकार के वाक्य समाज में अमान्य हैं क्योंकि कहीं तो ये भाषा के संरचनागत नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं और कहीं मानकत्व के नियमों का। मानकत्व के नियम कहीं न कहीं भाषा क्षेत्र की समाज-व्यवस्था से भी सम्बद्ध होते हैं। भाषा मूलत: और अन्तत: समाज में और समाज के लिए प्रयुक्त होती है। समाज बहुआयामी होता है इसलिए भाषा-प्रयोग के भी अनेक आयाम होते है।

समाज में सभी लोगों का एक ही स्तर नहीं होता। भिन्न-भिन्न दृष्टियों से उनका स्तर तय होता है, यथा—सामाजिक संबंध, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि। सामाजिक संबंधों में—पति-पत्नी, भाई-बहन, माँ-बेटा, बाप-बेटा, मालिक-नौकर, अधिकारी-कर्मचारी, उपभोक्ता-दुकानदार, सेवादाता-सेवाप्रदाता, छोटा-बड़ा भाई, विद्यार्थी-अध्यापक आदि अनेक प्रकार के औपचारिक-घनिष्ठ संबंध देखे जा सकते हैं। सामाजिक संबंध बहुत जटिल होते हैं और तदनुरूप भाषा भी। उदाहरणार्थ, भारतीय समाज में स्त्री को देवी का स्थान दिया गया है और वह सदैव पूज्य मानी गई है—यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:। दूसरी ओर इसी समाज में नारी को 'पैर की जूती' मानने वाला दृष्टिकोण कुछ लोगों का रहा है। ऐसी स्थिति में प्रयोग की जाने वाली भाषा का स्वरूप निश्चय ही भिन्न होगा। एक तीसरी स्थिति भी वर्तमान समाज में उभरी है जिसमें नारी समानता का अधिकार ले रही है, माँग रही है। इन सभी स्थितियों में भाषा का विविधमुखी होना आवश्यक ही है।

'देवी' नारी (1) के प्रति हमारी भाषा औपचारिक और आदरपूर्ण होगी; मित्र, सखी, सहकर्मी और समानता का अधिकार रखने वाली नारी (2) के प्रति हमारी भाषा औपचारिक और आदरपूर्णता से प्रारंभ होकर संबंधों की घनिष्ठता की सीमा

Scanned by TapScanner